महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

MAHATMA GANDHI CENTRAL UNIVERSITY
(Established by an Act of Parliament)
TempCamp Office, Zila School Campus, Motihari,
District: East Champaran, Bihar – 845401
www.mgcub.ac.in

जे.के. मेहता

पाठ्यक्रम – GPS4009 (प्रमुख गांधीवादी विचारक)

डॉ. जुगल किशोर दाधीच
सह आचार्य
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

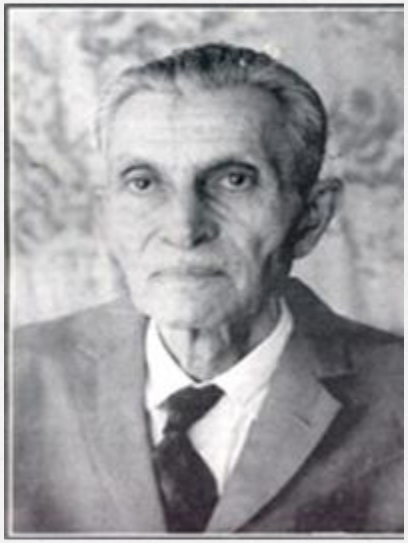

जे.के. मेहता

जन्म	:	14 दिसंबर 1901, राजनांदगांव
मृत्यु	:	9 अगस्त 1980
शिक्षा	:	इलाहाबाद विश्वविद्यालय
व्यवसाय	:	Economist, Philosopher, Professor & Author

मेहता : एक दार्शनिक अर्थशास्त्री

- प्रोफेसर जे. के. मेहता ने अर्थशास्त्र को एक नवीन दृष्टि दी थी। उनका चिंतन पाश्चात्य अर्थशास्त्रियों के भौतिक दृष्टिकोण से सर्वथा विपरीत तथा दर्शन, संस्कृति और अध्यात्म के अनुरूप रहा है। विभिन्न धर्म, दर्शनों में एवं प्राचीन ऋषियों, मुनियों ने सदा से ही मनुष्य को सादा जीवन जीने, अपनी इच्छाओं को कम करने एवं सदाचार, सादगीपूर्वक जीवन व्यतीत करने पर बल दिया है।
- प्रो. मेहता ने इसी दर्शनको आर्थिक विचारों में व्यक्त करने का प्रयास किया। उनका कहना था– अर्थशास्त्र का संबंध इच्छाओं की संतुष्टि से नहीं अपितु इच्छाओं के अन्त से है जिससे की इच्छारहित अवस्था अर्थात् निर्वाण को प्राप्त किया जा सकता है। इच्छाविहीनता के आर्थिक सिद्धान्त के आधार पर मेहता ने अपने अर्थशास्त्र की संपूर्ण संकल्पना को प्रस्तुत किया।

अर्थशास्त्र का दर्शन

- प्रो. मेहता एक दार्शनिक अर्थशास्त्री थे जिन्होंने अर्थशास्त्र की व्याख्या दार्शनिक विचारों के आधार पर की। उन्होंने दर्शन को दृढ़तापूर्वक मानवीय ज्ञान की समस्त शाखाओं का मूल आधार माना। उनके अनुसार प्रत्येक विज्ञान में दर्शन की विद्यमानता होती है और अर्थशास्त्र भी इससे अछूता नहीं है। अर्थशास्त्रीय सत्य को प्राप्त करने का प्रयास, अर्थशास्त्र और दर्शनशास्त्र को मिला देता है। प्रतीष्ठित और नव प्रतीष्ठित अर्थशास्त्रियों की तरह मेहता इस बात पर विश्वास नहीं करते है कि आर्थिक विज्ञान मानवीय मांगों की संतुष्टि अत्यधिक सीमा तक नहीं करते हैं।
- मेहता के अनुसार अर्थशास्त्र का उद्देश्य मांगों से स्वतंत्रता प्राप्त करके अथवा उनसे निवृत्त होकर मांगविहीनता की अवस्थता में पहुँचने का होना चाहिए। मांगविहीनता की अवस्था में पहुँकर ही व्यक्ति पूर्णानंद अथवा निर्वाण की प्राप्ति करता है। इस स्थिति में अर्थशास्त्र और दर्शनशास्त्र का गठबंधन हो जाता है। वे यह तर्क देते हैं कि अर्थशास्त्र का अंतिम उद्देश्य पूर्ण आनंद की प्राप्ति करना है।

इच्छा संयम के दार्शनिक उपाय

प्रो. मेहता ने इच्छाओं के अल्पीकरण का भारतीय दर्शन पर आधारित दार्शनिक विश्लेषण किया है। उनके मत में इच्छाओं के अंत से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। इस सम्बन्ध में इच्छाओं और मांगों से मुक्ति पाने के उपाय में भी उन्होंने भारतीय दर्शन के सिद्धान्तों को उजागर किया है। इच्छाओं से मुक्ति के सम्बन्ध में वे भक्तियोग, ज्ञानयोग एवं कर्मयोग का सुझाव देकर आर्थिक समस्याओं को दार्षनिक समाधान देते हैं।

मेहता : एक आर्थिक वैज्ञानिक

प्रोफेसर जे.के. मेहता ने अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में जहां अध्यात्म और दर्शन पर आधारित एक नवीन चिन्तन, दिया वहीं उन्होंने अपने आर्थिक चिन्तन को विज्ञान की कसौटी पर भी कसा। अतः उन्हें एक आर्थिक वैज्ञानिक कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा।

मानवीय व्यवहार और अर्थशास्त्र

मेहता के अनुसार अर्थशास्त्र पूर्णतः मानवीय सम्बन्धों का विज्ञान है, जो मुख्यतः दो आधारों पर आधारित है–

1. मनुष्य की समग्र गतिविधियां।
2. मनुष्य की पारस्परिक गतिविधियां।

मांग का वैज्ञानिक आधार

प्रोफसेर मेहता के अनुसार मांगो की अपनी स्वयं की प्रकृति और क्षेत्र होता है, जो मांगों की विशेषताओं को स्पष्ट करता है । उनके अनुसार मनुष्य मांगों से मुक्त होना चाहता है।

मेहता एक : कल्याणकारी अर्थशास्त्री

प्रो. मेहता ने सामाजिक कल्याण की सम्पूर्ण अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए समाज, सामाजिक कल्याण के अर्थ, सामाजिक कल्याण का मापन, अधिकतम सामाजिक कल्याण, कल्याण और मांगों का सम्बन्ध आदि की व्याख्या की है।

- समाज और सामाजिक कल्याण
- मांगविहीनता और सामाजिक कल्याण
- धन और कल्याण का संबंध
- सामाजिक कल्याण और क्षतिपूर्ति
- सामाजिक कल्याण की प्राप्ति

मेहता : इच्छाओं का सिद्धान्त

- प्रो. जे.के. मेहता ने अर्थशास्त्र की प्रकृति और क्षेत्र के संबंध में एक दार्शनिक चिन्तन प्रस्तुत किया है। अपनी पुस्तक Studies पद Advance Economic Theory में अपने इच्छाविहीनता अथवा आवश्यकविहीनता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।
- मेहता ने इस सिद्धान्त को पाश्चात्य अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों के विरोध में विकसित किया। प्राचीन अर्थशास्त्रियों का मानना था– अधिकतम संतुष्टि ही मानवीय व्यवहार का अन्तिम लक्ष्य है तथा इस अन्तिम लक्ष्य को मानवीय इच्छाओं के साधन से प्राप्त किया जा सकता है। इस विचारधारा के समर्थकों का मानना है कि अधिकतम संतुष्टि केवल तभी संभव है जब दिए गये संसाधनों के माध्यम से अधिकतम इच्छाओं की संतुष्टि की जा सके।

- प्रो. मेहता ने इस मान्यता को चुनौती देते हुए कहा– अधिकतम संतुष्टि की स्थिति का मांगों अथवा इच्छाओं के साथ निश्चित रूप से कोई सुसंगत संबंध नहीं है। उनका मानना था– मांगों या इच्छाओं के अधिकतम होने पर ही अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है, यह आवश्यक नहीं।
- मेहता ने इच्छाओं की प्रकृति एवम् इच्छाओं की पूर्ति से प्राप्त होने वाली संतुष्टि को विश्लेषित कर पाश्चात्य अर्थशास्त्र की इस धारणा का खण्डन किया कि अधिक मांगों से अधिक संतुष्टि प्राप्त होती है।
- मेहता ने इच्छाओं के न्यूनीकरण पर बल दिया है।

इच्छाओं की अवधारणा

- इच्छाएं मानवीय व्यवहार का एक अभिन्न अंग हैं जिनकी पूर्ति के लिए मनुष्य साधनों के प्रयोग का सहारा लेता है।
- कुण्डू एवं टूटू (Kundu and Tutoo) ने इच्छाओं को परिभाषित करते हुए लिखा है– इच्छा आवश्यकता से घनिष्ठतः सम्बन्धित है तथा वह किसी प्रकार की आवश्यकता होने की परिचायक है। व्यक्ति की आवश्यकताएं उसके व्यवहार के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं।

इच्छाओं की प्रकृति

- प्रोफसेर मेहता के अनुसार अर्थशास्त्र में जिस मानवीय व्यवहार का अध्ययन किया जाता है वह मानव मस्तिष्क की असाम्यवस्था का प्रकटीकरण है।

इच्छाओं के प्रकार

इच्छाओं के स्वरूप को समझने के लिए उसके विभिन्न प्रकारों को जानना समीचीन होगा।

- चेतन और अचेतन इच्छाएं
- वर्तमान एवं भविष्य की इच्छाएँ
- इच्छा एवम् उपभोग और उत्पादन

मेहता : इच्छाविहीनता का सिद्धान्त

- गांधी ने कहा था– The human mind is like a restless bird, the more it gets, the more it wants and still remains unsatisfied. इस कथन से स्पष्ट है कि मनुष्य की बढ़ती हुयी इच्छाओं और आवश्यकताओं की संतुष्टि संभव नहीं है।

- प्रोफसेर जे.के. मेहता ने इसी विचार को अपने आर्थिक सिद्धान्तों को आधार बनाया और इच्छाविहीनता अथवा आवश्यकताविहीनता के सिद्धान्त का प्रतिपादित किया। उन्होंने बताया कि वास्तविक सुख इच्छाओं की अधिकता में नहीं वरन् उनके अल्पीकरण में है।
- मेहता ने इच्छाओं की समस्या को ही आर्थिक समस्या बताया क्योंकि इच्छाओं को कम करने से ही सुख की प्राप्ति होती है।
- मेहता ने लिखा– अर्थशास्त्र उन मानवीय व्यवहारों का अध्ययन करता है जो आवश्यकता अथवा इच्छाविहीनता की स्थिति को प्राप्त करने के लिए किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य उस समय अधिकतम संतुष्टि अथवा सुख प्राप्त कर सकता है जब एक तरफ तो वह संसाधनों का उपयोग सीमान्त उपयोगिता के आधार पर करे तथा दूसरी ओर वह आवश्यकताविहीनता अथवा इच्छाविहीनता की स्थिति में पहुँचने का प्रयास करे।

- मेहता नें यह भी कहा कि मानवीय व्यवहारों का उद्देश्य साम्यावस्था को प्राप्त करना है। इससे मनुष्य को को यह अनुभव होता है कि इच्छाविहीनता ही वह लक्ष्य है जिसे सभी को प्राप्त करना है।
- प्रोफसेर मेहता के अनुसार– मनुष्य का जीवन एक प्रयास है, उसे इच्छाओं की दासता से मुक्त कराने का और मोक्ष के अन्तिम सत्य को प्राप्त करने का। सभी मानवीय व्यवहारों का उद्देश्य इसे समझना ही है।

संतुष्टि, सुख और आनन्द

प्रोफसेर मेहता के 'अधिकतम संतुष्टि के लक्ष्य' की पूर्ति आवश्यकताओं को न्यूनतम करने से ही प्राप्त की जा सकती है। उनके अनुसार अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य संतुष्टि को अधिकतम करना नहीं अपितु वास्तविक सुख को प्राप्त करना है।

इच्छाविहीनता की स्थिति प्राप्ति के उपाय

- मेहता नें कहा कि आवश्यकता विहीनता की अवस्था तब प्राप्त होती है जब मस्तिष्क पूर्ण साम्यावस्था में पहुँच जाता है और किसी भी प्रकार की इच्छा का अस्तित्व नहीं रहता है।
- मेहता यह भी स्पष्ट करते हैं कि किसी भी व्यक्ति का अस्तित्व बिना इच्छा अथवा आवश्यकता के नहीं रह सकता है क्योंकि आवश्यकताएं असीमित है और एक इच्छा की संतुष्टि दूसरी इच्छा को जन्म देती है। अतः प्रोफसेर मेहता आवश्यकताओं को कम करने का सुझाव देते हैं।
- बाह्य शक्तियों अथवा पर्यावरण को परिवर्तित करना अर्थात् बाह्य पर्यावरण का मस्तिष्क से सामंजस्य स्थापित किया जाए जिससे वे मस्तिष्क के अनुकूल हो जाएं।
- मस्तिष्क को ऐसी स्थिति में रखा जाए कि वह बाह्य शक्तियों एवम् बाह्य पर्यावरण से अप्रभावित रहे। इसके लिए मस्तिष्क को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

जे.के. मेहता की किताबें

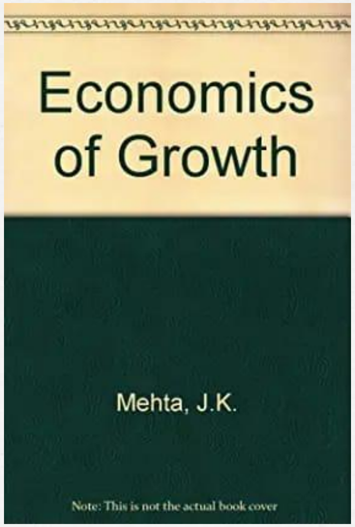
Economics of Growth
Mehta, J.K.
Note: This is not the actual book cover

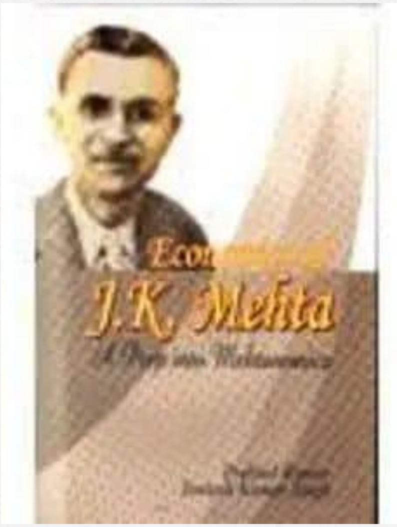
J.K. Mehta

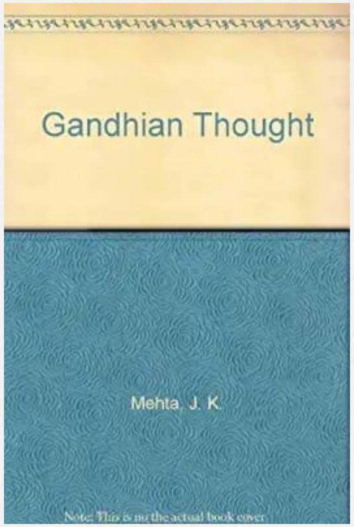
Gandhian Thought
Mehta, J. K.
Note: This is no the actual book cover

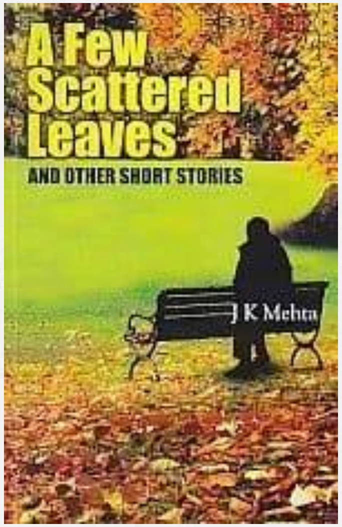
A Few Scattered Leaves
AND OTHER SHORT STORIES
J K Mehta

धन्यवाद